BERKELEY - ESSE EST PERCIPI

बर्कले - सत्ता अनुभवमूलक है ।

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons. Student)

बर्कले ने आत्मा से स्वतंत्र किसी जड़तत्त्व के अस्तित्व को अस्वीकार किया है। अपने ठोस तर्कों के आधार यह सिद्ध कर दिया की तथाकथित बाह्य जड़ पदार्थों का वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं है इसका हमें प्रत्यक्ष नहीं हो सकता क्योंकि प्रत्यक्ष केवल गुणों का होता है बाह्य पदार्थों का नहीं।बाह्य पदार्थों का अनुमान भी नहीं कर सकते क्योंकि गुण संवेदना मात्र है और आत्मा पर निर्भर है बाह्य पदार्थ पर नहीं। इस तरह वर्कले जड़तत्त्व का खंडन कर अपने सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं। उनका प्रसिद्धऔर प्रकलित सिद्धांत है - 'सत्ता अनुभव मूलक है'या दृष्टि ही सृष्टि है (Esse est percipi)।इसे 'दृश्यते इति वर्तते', 'यत सत्-तद दृश्यम', या 'सत्यम दृश्यम' या 'यत दृश्यम तद सत' आदि रूपों में भी निरूपित किया जाता है। कहने का अभिप्राय यह है कि जो दृश्य है वही सत्य है अर्थात उसी की सत्ता मानी जा सकती है जो अनुभव करता है या अनुभव किया जाता है।अनुभव कर्ता यानी आत्मा और अनुभव का विषय यानी विज्ञान। अतः आत्मा और उसके विज्ञानों के अतिरिक्त और किसी की सत्ता नहीं है। बर्कले का कहना है कि मेरे लिए किसी भी वैसी वस्तु को देखना अथवा अनुभव करना असंभव है जिसकी कोई संवेदना नहीं होती।इसलिए मेरे लिए अपने विचार में किसी भी ऐसी वस्तु को धारण करना असंभव है जिसकी न तो कोई संवेदना हो और न प्रत्यक्षीकरण(It is impossible for me to see or feel anything without an actual sensation of that thing: So it is impossible for me to conceive in my thought any sensible thing or object distinct from the sensation or perception of it - Berkeley)

दृष्टि ही सृष्टि है या सत्ता की दृष्टता है के सिद्धान्त को बर्कले लॉक की शरीर की अवधारणा की विवेचना से निकलता है। लॉक का माननाहै कि शरीर या वस्तु में लठोसपन विस्तार ,आकार ,गति ,रूप ,रंग , स्वाद , गंध तथा शब्द होते हैं।इनमें से कुछ गुण जैसे रंग ,शब्द , स्वाद और गंध प्रत्यक्षकर्ता के कारण प्रदर्शित होते हैं ।यह गुण शरीर या वस्तु में न होकर प्रत्यक्षकर्ता में ही होते हैं।लॉक इन गुणों को गौण मानता है इसके विपरीत विस्तार, आकार,ठोसपन ,गति तथा स्थिति के गुण स्वयं वस्तु में यह शरीर में होते हैं ।लॉक ने उन्हें प्राथमिक गुण माना है।यहां पर लॉक के विचारों को विवेचना कर बर्कले यह प्रदर्शित करता है कि तथाकथित प्राथमिक गुण भी वैसे ही गौण हैं जैसे कि गौण गुण ।विस्तार तथा

ठोसपन के प्रत्यय स्पर्शेन्द्रीय का निष्कर्ष है।विस्तार को रंग तथा दूसरे गौण गुणों से पृथक नहीं किया जा सकता। किसी भी ऐसी वस्तु का प्रत्यय नहीं हो सकता जिसका विस्तार हो किंतु जिसमें कोई रंग ना हो।मेरे मन में ऐसे किसी भी पदार्थ का कोई प्रत्यय नहीं है। अतःसिर्फ अमूर्त है जिसका कोई अस्तित्व नहीं है।

बर्कले के अनुसार प्रत्यक्ष से परे अस्तित्व नाम की कोई चीज नहीं है।प्रत्यक्ष का ससीम तथा असीम अर्थात व्यक्ति तथा ईश्वर सभी की आत्मा से संबंध रहता है। परंतु वस्तुवादियों के द्वारा या आक्षेप लगाया जाता है की क्या जीवात्मा ही इंद्रिय संवेदन रूपी विज्ञानों द्वारा प्रतीति के समय जगत की सृष्टि करता है ? किंतु वस्तु वादियों का यह आरोप निराधार है क्योंकि वर्कले ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि जीवात्मा जगत की सृष्टि नहीं करता ।जगत और विज्ञान जगत की सृष्टि, उन विज्ञानों की सृष्टि जो इंद्रिय संवेदनों के रूप में हमारी आत्मा में प्रविष्ट होते हैं ईश्वर करता है। कभी-कभी यह भी सवाल सामने आता है कि जब किसी वस्तु का अस्तित्व उनके प्रत्यक्षकृत होने में ही है या फिर हमारे ज्ञान के विषय मात्र विज्ञान है तो फिर हमें आत्मा का बोध कैसे होता है ? क्योंकि आत्मा ज्ञाता है और विज्ञान गेंय के फिर हमें ज्ञाता (आत्मा)का ज्ञान कैसे होता है। बर्कले का कथन है कि अपनी आत्मा का ज्ञान तो प्रत्येक व्यक्ति के स्वानुभूति से प्रत्यक्ष होता रहता है।इसके विषय में किसी को कोई शंका नहीं ।चूँकि विज्ञान ज्ञान के विषय हैं अतः इनका ज्ञाता अवश्य होना चाहिए। वह ज्ञाता आत्मा है जो विज्ञानों से पृथक होते हुए भी उनका अधिष्ठान है । अतः आत्मा इंद्रियानुभव का विषय नहीं बल्कि स्वानुभूति का विषय है ।बर्कले का सिद्धांत सत्ता अनुभवमूलक है (Esse Est Percipi)बदल कर सत्ता अन्तरबोधमुलक(Esse Est Concipi) हो जाता है ।